Sociology

B-III(H) Paper — III

Rural urban continum

(1) ग्रामीण एवं नगरीय सातत्य में अन्तर

उत्तर! ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय के विभिन्न भेदों को देखते हुए एक नवीन अवधारणा का विकास हुआ है जिसे हम ग्रामीण नगरीय सातत्य कहते है यह अवधारणा इस महत्वपूर्ण प्रश्न से सम्बध है कि ग्रामीण नगरीय भिन्नताएं एक दुसरे से पूर्णतया भिन्न रूप से विकसित होती है अथवा यह भिन्नताएं सापेक्षिक है और दोनों समुदायों को एक-दुसरे से जोड़ती है ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय की विभिन्नताएं उनकी भौगोलिक तथा भौतिक स्थिति को देखते हुए स्पष्ट की है समाजशास्त्रीय विश्लेषण के दृष्टिकोण की है से समुदाय की विवेचना में हमारा ध्यान सामाजिक संबधों तथा सामाजिक संरचना पर केन्द्रीत रहा है यदि इन आधारों को महत्वपूर्ण मान लिया जाए तो ग्रामीण-नगरीय सातत्य एक ऐसी स्थिती को स्पष्ट करता है जिनमें अनेक विशेषताएं ग्रामीण और नगरीय अखंडता को बनाये हुए है अथवा जो ग्रामीण-नगरीय अखंडता को स्पष्ट करती है-

ग्रामीण नगरीय सातत्य की प्रकृती को स्पष्ट करते हुए पवार ने लिखा है कि अतीत - ग्रामीण नगरीय सातत्य की अवधारणा को नगरीकरण की प्रक्रिया के रूप में समझा जाता रहा था इस प्रक्रिया के विश्लेषण में सीमा तत्व को कोई महत्व नही दिया गया ग्रामीण नगरीय समुदाय के बीच इतनी समानता है कि इन्हे एक-दुसरे से नही किया जा सकता है Bergel ने कहा है कि व्यक्ति यह जानता हुआ प्रतीत होता है कि नगर है परंतु कोई व्यक्ति नगर को समुचित रूप से परिभाषित नही कर सका है- गाँव और नगर की-

Scanned with CamScanner

2.

भाषा की अस्पष्टता के कारण ही सर्वमान्य से यह नहीं कहा जा सकता है कि किस स्थान पर गाँव की सीमा समाप्त हो रही है और कहाँ से नगर की विशेषताएँ प्रारंभ हो रही हैं

व्यावहारिक रूप से ग्रामीण - नगरीय सातत्य का तात्पर्य उन ग्रामीण और नगरीय विभेदों से है जो दोनों समुदायों को एक-दूसरे की तुलना में स्पष्ट करते हैं तथा उनके बीच निकटता को बनाये रखते हैं ग्रामीण - नगरीय सातत्य को कुछ विशेषताओं के आधार पर दर्शाया गया है

(1) नगर और गाँव में केवल मात्रा का अन्तर है :- नगर और गाँव में विभेद करना इसलिए कठिन प्रतीत होता है कि कोई भी व्यक्ति यह नहीं बतला सकता है कि किस स्थान पर गाँव की विशेषताएँ समाप्त होती है और कहाँ से नगरीय विशेषताओं का प्रारंभ हो जाता है गाँव और नगर के बीच तहसील, कस्बा, टाउन एरिया आदि क्षेत्रीय उपविभाजन आते हैं भारत में ऐसे बहुत से स्थानों को नगर कहा जाता है जहाँ कि जनसंख्या प्रतिवर्गमील 4000 व्यक्ति है यूरोप में साधारणतया 2000 से अधिक जनसंख्या वाले स्थानों को गाँव माना जाता है

(2) नगरों में विभिन्न प्रकार के पर्यावरण :- नगर के अन्दर विभिन्न प्रकार के जीवन-स्तर तथा मनोवृत्तियाँ वाले व्यक्ति साथ-साथ रहते हैं कुछ व्यक्तियों की मनोवृत्तियाँ पूर्णतया नगरीय होता है जबकि कुछ व्यक्ति पूर्णतया नगरीय होता है जबकि कुछ व्यक्ति पूर्णतया ग्रामीण मनोवृत्ती के होते हैं किसी स्थान पर धनी और संभ्रांत व्यक्ति रहते हैं जबकि कुछ व्यक्तियों का जीवन-स्तर ग्रामीणों से भी निम्न होता है

Scanned with CamScanner

ऐसी स्थिती में नगर में गाँव का पर्यावरण और अनेक नगरीय मनोवृत्तियों की विद्यमानता बहुलता से देखने को मिल सकती है

(3) नगर तथा गाँव का परिवर्तनशील स्वभाव:- नगर और गाँव में से किसी की भी प्रकृती पूर्ण तथा स्थायी नही है औद्योगीकरण के फलस्वरूप नगर की सीमाओं में लगे गाँव निरन्तर नगर के क्षेत्र में मिलते जा रहे है फलस्वरूप अनेक ग्रामीण तत्वों का नगर में प्रसार है और दुसरी ओर लाखों ग्रामीण नगर के कारखानों तथा कार्यालयों में कार्य करने के पश्चात अपने गाँव में लौटते है तो ग्रामीण समुदाय में नगरीय विशेषताओं का प्रसार हो जाता है इस दृष्टिकोण से एक ऐसा सर्वमान्य आधार नही ढुँढा जा सकता जिसे कसौटी मानकर नगर तथा गाँव को एक-दुसरे से पूर्णतया पृथक किया जा सके

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण-नगरीय सातत्य की अवधारणा, नगर और गाँव के स्पष्ट विभेद से उतनी सम्बध नही है जितनी की इन दोनों समुदायों के बीच निरंतरता को स्पष्ट करने वाले प्रक्रिया से वास्तव में यदि नगर और गाँव को केवल जीवन की एक विधा माना जाए तो प्रतिमान के आधार पर यह एक दुसरे से पृथक है लेकिन परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं के आधार पर इनके बीच कोई विभेद नही किया जा सकता।

N. Choudhary